22

''एक मनुष्य के द्वारा''

(5:12-21 का एक परिचय)

रोमियों 5:12-21 हमें आश्वस्त करता है कि मसीह ने हर उस समस्या को जो आदम द्वारा या किसी और तरह मनुष्यजाति में आई हो, को हल कर दिया है। जे. डी. थॉमस ने इसे इस प्रकार लिखा है: ''जो हमने आदम में खोया, वह हमें मसीह में मिल जाता है। ... मसीह के द्वारा हमारा लाभ आदम में हुई हानि से कहीं अधिक है।''[1] रोमियों 5 अध्याय के अन्तिम भाग का मूल संदेश यही है।

इसे वहीं छोड़कर अध्याय 6 में जाने का लालच हो सकता है, परन्तु हम कम से कम तीन कारणों से रोमियों 5:12-21 को छोड़ नहीं सकते। पहला तो यह कि जहां तक हो सके हमें रोमियों की पुस्तक के सब वचनों से निपटना आवश्यक है। दूसरा इन वचनों में कुछ विचारों और शब्दों को अगले अध्यायों में विस्तार दिया गया है, जिस कारण पृष्ठभूमि के रूप में हमें इस वचन की कुछ समझ होनी आवश्यक है। तीसरा, पवित्र आत्मा ने इन आयतों में महत्वपूर्ण सच्चाइयां शामिल कीं।

मुझे रोमियों 5:12-21 की उपेक्षा करके अगले अध्याय में जाने का लालच क्यों होगा? क्योंकि यह वचन *अत्यन्त* कठिन है। मोसिस ई. लार्ड ने इसे ''पत्र के सबसे कठिन पद्यों में से एक'' कहा है।[2] रिचर्ड रोजर्स ने कहा है कि कई लोग रोमियों 5:12-21 को पूरी बाइबल में धर्मशास्त्र का सबसे कठिन वचन मानते हैं।[3] आयत 12 पर टिप्पणी करते हुए डग्लस जे. मू ने लिखा है कि ''हर शब्द, वास्तव में हर विचार चिह्न! अत्याधिक विवाद की बात है।''[4]

कई कारणों से, रोमियों 5:12-21 टीकाकारों के लिए चुनौतियां देता है। इसका एक कारण पौलुस की शैली है। कई बार उसने वाक्य को पूरा नहीं किया (आयत 12 का अन्त देखें)। इसके अलावा उसने विचार से विचार से विचार से छलांग लगाई; आयत 12 में आरम्भ की गई बात आयत 18 तक पूरी नहीं होती। फिर उसने क्रियाओं को और अन्य मुख्य शब्दों को छोड़ दिया (उदाहरण के लिए [NASB में अनुवाद] आयत 16 में इटैलिक किए गए शब्दों को देखें, जो यह संकेत देते हैं कि इन शब्दों को अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया था)। इसके अलावा कहीं न कहीं इस पद्य में पौलुस का उद्देश्य आदम और मसीह में समानता बनाना था। कई बार उसने यह ध्यान दिलाया कि वे मिलते-जुलते कैसे हैं; कई बार यह कि वे भिन्न कैसे हैं; और कई बार यह कि उनमें कोई तुलना ही नहीं है।

आम तौर पर इस पर सहमति पाई जाती है कि यह भाग बहुत संक्षिप्त है।[5] एक लेखक की टिप्पणी है, ''पौलुस के सब लेखों में ... यह पद्य शायद सबसे संक्षिप्त है।''[6] (5:12-21 को पढ़ते हुए, मुझे बहुत पहले लिखे संक्षिप्त सरमन नोट्स को देखने पर याद आता है कि क्या होता है। मैं सोचता हूं, ''*इस* का क्या अर्थ था? ... याद नहीं आ रहा कि इस प्वायंट पर मैंने क्या कहा था ... था मैंने 'कुत्ते का उदाहरण' कौन सा इस्तेमाल किया *था*।'') पौलुस का तर्क इतना संक्षिप्त है कि

उसके विचारों को समझने के लिए वचन को विस्तार देना आवश्यक है। समस्या यह है कि हम पक्का नहीं कह सकते कि किन शब्दों की आवश्यकता है। परिणाम यह होता है कि हम ''बाइबल के अन्य भागों से लिए गए ... विश्वासों'' के साथ ''रिक्त स्थान भरने'' लगते हैं।[7]

पौलुस की शैली और उसके शब्दों में जोड़ने की आवश्यकता के कारण वचन पर बहुत असहमतियां पाई जाती हैं। योग्य विद्वान भी जिन्हें मैं विश्वासी शिक्षक समझता हूं (तीतुस 1:13) ऐसे प्रश्नों पर जो आगे आएंगे सहमत नहीं होते। क्या आयत 12 वाली ''मृत्यु'' शारीरिक मृत्यु है, आत्मिक मृत्यु या दोनों का कुछ मेल? क्या आयत 12 वाला ''सबने पाप किया'' 3:23 की तरह व्यक्तिगत पाप है या इन शब्दों का अर्थ कुछ और हो सकता है? सम्मानित लेखकों में ऐसी असहमतियां रोमियों की पुस्तक के नये छात्र के लिए निराशाजनक हो सकती हैं।

अन्त में 5:12-21 की व्याख्या करने का हमारा काम इस तथ्य से और जटिल हो जाता है कि मनुष्यों की शिक्षाओं को बढ़ावा देने वाले इस पद्य के अस्पष्ट पहलुओं का लाभ उठाते हैं। लैरी डियसन ने सुझाव दिया है कि यह वचन ''पूरी बाइबल के सबसे अधिक दुरुपयोग किए जाने वाले पद्यों में से एक है।''[8] इसलिए यह विचार करने से पहले कि यह *क्या* सिखाता है कि यह ज़ोर देना आवश्यक होगा कि यह क्या *नहीं* कहता।

रोमियों की पुस्तक की हमारी यात्रा के इस भाग पर यदि कोई रोड साइन लगा होता, तो इसमें यह लिखा हो सकता था ''खतरनाक परिस्थितियां! आगे अपनी ज़िम्मेदारी पर जाएं!'' इस भाग में से हमारा जाना आसान नहीं होगा। परन्तु मुझे उम्मीद है कि इस वचन पर तीन पाठों को समाप्त करने तक आपको इतनी समझ मिल जाएगी जो आपके इस सफ़र को उपयोगी बना देगी।

यह पाठ एक बुनियाद का काम करेगा। हम वचन के अपने अध्ययन को अगली प्रस्तुति में आरम्भ करेंगे।

यह पद्य क्या *नहीं* सिखाता

रोमियों 5:12-21 उन पद्यों में से एक है, जिनसे हम इसके बजाय कि क्या सिखाता है यह यकीन से कह सकते हैं कि यह क्या *नहीं* सिखाता। कुछ लोग इस विचार का मज़ाक उड़ाते हैं। वे पूछते हैं, ''यदि आपको यह नहीं पता कि यह क्या *सिखाता* है तो यह कैसे पता चल सकता है कि यह क्या *नहीं* सिखाता?'' मैं उदाहरण देता हूं कि यह कैसे हो सकता है। दो आदमी बातें कर रहे हैं और एक स्त्री उनके पास से गुज़र जाती है। एक आदमी दूसरे से कहता है, ''वह औरत कौन है? क्या यह तुम्हारी पत्नी है?'' दूसरा आदमी उत्तर देता है, ''मुझे नहीं मालूम वह कौन है, परन्तु मैं यह बता सकता हूं कि वह कौन *नहीं* है। वह मेरी पत्नी *नहीं* है।'' हो सकता है कि मुझे 5:12-21 की हर बात पता न हो, परन्तु मैं इतना निश्चय के साथ कह सकता हूं कि यह कुछ शिक्षाएं *नहीं* देती।

यह इस बात की शिक्षा *नहीं* देती कि हमें आदम के पाप का दोष विरासत में मिलता है

स्वयं ''मसीही'' कहलाने वाले लोगों में यह विश्वास आम तौर पर पाया जाता है कि किसी न किसी तरह हम में आदम के पाप का दोष होता है। पौलुस के लगभग दो सौ साल बाद, तीसरी

सदी में सिकन्दरिया के एक धर्मशास्त्री ओरिगन ने यह सिखाया कि ''नये जन्मे नवजात शिशु पाप से मुक्त'' नहीं होते।[9] पांचवीं सदी में अगस्टिन ने इस विचार को विस्तार देकर प्रसिद्ध किया। कैथोलिक लोगों ने इसे ''मूल पाप की शिक्षा'' का नाम दिया। बाद में ''आनुवंशिक भ्रष्टता'' या ''पूर्ण आनुवंशिक भ्रष्टता'' की शब्दावली को प्राथमिकता देते हुए अधिकतर प्रोटेस्टेंट लोगों ने इस अवधारणा को अपना लिया। यह विश्वास करते हुए कि यह ''भ्रष्टता'' आदम से मीरास में मिली है, वे ''नवजात शिशुओं की भ्रष्टता'' की बात करते थे। जॉन कैलविन ने इस शिक्षा को आगे बढ़ाया कि आदम ने ''हमारे स्वभाव को भ्रष्ट किया, बिगाड़ा, चरित्र भ्रष्ट किया और बर्बाद किया।''[10]

''पूर्ण आनुवंशिक भ्रष्टता'' उस शिक्षा का आधार है, जिसे कई बार ''कैल्विनवादी थियॉलोजी'' कहा जाता है। नीचे संक्षेप में बताया गया है कि ''पूर्ण आनुवंशिक भ्रष्टता'' किस प्रकार लोगों के उद्धार पाने के ढंग की कैल्विनवादी अवधारणा से मेल खाती है:

- कहा जाता है कि लोग आदम के पाप के साथ कलंकित पैदा होते हैं! इस कारण वे अपने आपको बचाने के लिए कुछ भी करने के अयोग्य हैं (''पूर्ण आनुवंशिक भ्रष्टता'')।
- कैल्विनवादी लोग, लोगों को नया जन्म देने और उन्हें बचाने के लिए परमेश्वर से पवित्र आत्मा को भेजने की उम्मीद करते हैं (''पवित्र आत्मा का प्रत्यक्ष कार्य'')।
- यह विश्वास करते हुए कि लोग उद्धार के लिए कुछ नहीं कर सकते, कैल्विनवादी लोग यह भी कहते हैं कि वे खोए हुए होने के लिए कुछ नहीं कर सकते (विश्वास त्याग की असम्भावना)।

''मूल पाप'' की शिक्षा का एक परिणाम यह हुआ कि कैथोलिक लोगों ने आदम के पाप से कलंकित (जैसा उनका विश्वास है) मरने वाले बच्चों की चिंता करना आरम्भ कर दिया। ''मूल पाप'' को प्रभावहीन करने के लिए उन्होंने बच्चों को ''बपतिस्मा देना'' आरम्भ कर दिया। इससे बपतिस्मा न पाए हुए बच्चों की समस्या हल नहीं हुई, सो उन्होंने ''बपतिस्मा न पाए हुए'' मृत नवजात शिशुओं के लिए अगले संसार के ठिकाने का आविष्कार किया जिसे ''लिम्बो'' कहा जाता है।[11] यह एक उदाहरण है कि गलत शिक्षाएं कैसे फलती हैं।

आइए ''मूल पाप की शिक्षा'' में ही वापस जाते हैं: लोगों के मन में ऐसा विचार कैसे आया? इस शिक्षा को बढ़ावा देने वाले लोग उन वचनों को उद्धृत करते हैं, जो पाप के बने रहने वाले और दूरगामी प्रभाव पर ज़ोर देते हैं (जैसे निर्गमन 20:5) या उन वचनों को जिनमें मनुष्य जाति के पापी होने को उभारने के लिए अतिशयोक्ति (बढ़ा चढ़ाकर कहना) का इस्तेमाल करते हैं (जैसे भजन संहिता 51:5[12])। तौ भी रोमियों 5:12-21 प्रमाण के उनके प्रमुख वचनों में से एक है। जैम्स आर. एडवर्ड ने लिखा है कि उस पद्य की आयत 12 ''मूल पाप की शिक्षा को उपजाने वाली भूमि रही है।''[13]

जैसा कि पहले संकेत दिया गया है, किसी न किसी रूप में यह शिक्षा मसीही कहलाने वाले संसार में विश्वव्यापी तौर पर सबसे अधिक माना जाने वाला नियम है। तौ भी मैं निश्चय के साथ

कह सकता हूं कि रोमियों 5 में इसकी शिक्षा *नहीं* दी गई। आरम्भ करने के लिए, इस पद्य में पौलुस का लक्ष्य पाप के स्वभाव पर गहन अध्ययन देना नहीं था। कई टीकाकार यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पौलुस का ऐसा उद्देश्य नहीं था।

- ''रोमियों 5:12-21 का फोकस 'मूल पाप' नहीं है ...'' (डग्लस जे. मू)।[14]
- ''आयत 12 ... अव्यावहारिक दृष्टिकोण से पाप की समस्या पर चर्चा ... नहीं करती। ... यहां [पौलुस का] उद्देश्य मूल पाप की शिक्षा को बढ़ावा देना नहीं है'' (जेम्स आर. एडवर्ड्स)।[15]
- ''भ्रष्ट स्वभाव या पापपूर्ण प्रवृत्तियों के बारे में पौलुस कुछ नहीं कहता; ऐसे विचार वचन पाठ में कुछ पढ़ते हैं'' (लियोन मौरिस)।[16]

इसके अलावा मैं इस दावे को नकारता हूं कि आयतें 12-21 ''आनुवंशिक भ्रष्टता'' की डॉक्ट्रिन सिखाती हैं क्योंकि ऐसा निष्कर्ष बाइबली व्याख्या के मूल नियम का उल्लंघन है। उस नियम को इस प्रकार कहा जा सकता है: ''किसी अस्पष्ट पद्य की व्याख्या ऐसे न करें, जिससे वह दिए गए स्पष्ट पद्यों से उलझ जाए।'' लगभग हर कोई इस बात को मानता है कि थोड़ा या पूरा ये आयतें *बहुत* अस्पष्ट हैं। यह सही है, इसलिए इस पद्य की व्याख्या इस प्रकार होनी चाहिए जिससे बाइबल की स्पष्ट शिक्षा का विरोध न हो। जैसे नीचे दी गई:

- बच्चे शुद्ध और पवित्र पैदा होते हैं, वे आदम के पाप से भ्रष्ट या कलंकित नहीं होते (देखें मत्ती 18:3; 19:14)।
- हर कोई अपने ही पाप के लिए ज़िम्मेदार है (देखें इफिसियों 2:1; कुलुस्सियों 2:13), न कि अपने पिता के पाप (यहेजकेल 18:20) या अपने पिता आदम के पाप का।

क्या मैं यह सुझाव दे रहा हूं कि आदम के पाप का उस संसार पर जिसमें हम रहते हैं, भयानक प्रभाव नहीं पड़ा? बिल्कुल नहीं। हमें आदम के पाप का *दोष* तो मीरास में नहीं मिलता परन्तु हमें उसके पाप के दूरगामी *परिणाम* मीरास में अवश्य मिले हैं। आयत 17 में JB का अनुवाद है ''एक मनुष्य के गिरने के *परिणाम* के तौर पर मृत्यु ने सब पर राज किया।'' ''दोष'' और ''परिणाम'' में क्या अन्तर है? यदि मेरे पिता हत्या के दोषी हों, तो उनका दोष मुझ पर नहीं आएगा यानी मुझे उस अपराध के लिए दण्ड नहीं दिया जा सकता। फिर भी उनके इस कृत्य के मुझे कई परिणाम भुगतने पड़ेंगे। जैसे मन की पीड़ा, कष्ट और अपमान। मैं फिर कहता हूं कि हमें आदम के पाप का दोष मीरास में नहीं मिलता, तौभी हम उसके कार्य के परिणाम हर रोज भुगतते हैं।

कौन से परिणाम? आयत 12 कहती है कि ''एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया।'' अदन की वाटिका में बुराई का केवल एक ही प्रतिनिधि स्पष्ट में था। सर्प (उत्पत्ति 3:1) या तो रूप बदलकर आया शैतान था (देखें प्रकाशितवाक्य 12:9) या शैतान का दूत। आज हमें बताया जाता है कि ''हमारा मलयुद्ध प्रधानों से और अधिकारों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं'' (इफिसियों 6:12)। ये ''दुष्टता की सेनाएं'' कहां से आ गईं? किसी तरह क्या आदम के आज्ञा न मानने में बुराई की शक्तियों के लिए संसार में आने के ''द्वार खोल'' दिए? मुझे

नहीं मालूम, परन्तु कोई बात हुई जिससे पृथ्वी पर दुष्टता बढ़ने लगी।

विशेषकर आयत 12 कहती है कि ''पाप के द्वारा *मृत्यु* [संसार में] आई।'' परमेश्वर ने आदम से कहा था, ''भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा'' (उत्पत्ति 2:17)। इस चेतावनी के बावजूद आदम और हव्वा ने वह फल खा लिया (उत्पत्ति 3:6)। जिसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें बाग से निकाल दिया गया ताकि वे जीवन के वृक्ष का फल न खा सकें (उत्पत्ति 3:24)। निकाले जाने पर उनकी देहें बिगड़ने लगीं यानी वे मृत्यु की ओर बढ़ने लगीं। मृत्यु का श्राप संसार में आ चुका था। उस कष्ट और पीड़ा पर विचार करें जो मृत्यु से अधिक हो सकता है; खुली कब्र के पास बहे आंसुओं पर विचार करें। कोई आश्चर्य नहीं कि पौलुस ने मृत्यु को ''शत्रु'' कहा (1 कुरिन्थियों 15:26)। यह सब आदम के पाप का परिणाम है।

मृत्यु के सदमे से कहीं अधिक युगों से धमकाने और दबाव डालने के द्वारा मृत्यु का इस्तेमाल करना शैतान का ढंग है। यीशु के बलिदान की बात करते हुए, इब्रानियों के लेखक ने कहा:

> इसलिए जब कि लड़के [सब लोग] मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह [मसीह] आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया; ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात शैतान को निकम्मा कर दे। और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ा ले (इब्रानियों 2:14, 15)।

सदियों से मृत्यु शैतान की ''बड़ी छड़ी'' अर्थात लोगों को उसकी बात मनवाने के लिए हथियार रही है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि यीशु की मृत्यु और जी उठने के द्वारा, प्रभु ने शैतान से उसकी ''बड़ी छड़ी'' छीन ली!

परन्तु इस बात को समझें कि शारीरिक मृत्यु आदम और हव्वा द्वारा पाप पर किए जाने के दिन समस्याओं के पिटारे की गठरी पर केवल लपेटन ही थी। परमेश्वर ने हव्वा को बताया, ''मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दु:ख को बहुत बढ़ाऊंगा; तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी'' (उत्पत्ति 3:16)। आदम को उसने बताया:

> ... जिस वृक्ष के फल के विषय में मैं ने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना, उसको तू ने खाया है,
>
> इसलिए भूमि तेरे कारण शापित है। ...
> वह तेरे लिये कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी, ...
> तू ... अपने माथे के पसीने की
> रोटी खाया करेगा,
> और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा;
> क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है,
> तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा (उत्पत्ति 3:17-19)।

आदम के पाप से पूरी सृष्टि प्रभावित हुई (देखें रोमियों 8:20-22)। जब भी कोई स्त्री जनने की पीड़ा में होती है, जब भी पसीने से तर कोई किसान एक और खुरपी चलाता है, जब भी कोई

कर्मचारी दिन भर के काम से थकता है, जब भी कोई प्राकृतिक आपदा आती है, तो हमारे लिए वह पाप के दूरगामी परिणामों का एक और सबूत होता है। हम पाप के सताए और पाप के मारे संसार में रहते हैं। बाइबल यह नहीं सिखाती कि आदम के पाप का दोष उसकी संतान को आगे दिया गया था, परन्तु उसके आज्ञा न मानने के परिणाम हम प्रतिदिन भुगतते हैं।

इस विषय को छोड़ने से पहले मुझे यह ध्यान दिलाना चाहिए कि आज के अधिकतर टीकाकार अब यह नहीं सिखाते कि बच्चे आदम के पाप से दागी आत्माओं के *दोष* के साथ पैदा होते हैं। ''पूर्ण आनुवंशिक भ्रष्टता'' की शिक्षा को आधुनिक स्वाद के लिए अधिक रुचिकर बनाने के लिए उन्होंने इसमें मिलावट कर दी है। अब अधिकतर लोग यह सिखाने को प्राथमिकता देते हैं कि आदम के पाप ने सब लोगों के भीतर ''पापपूर्ण प्रवृत्तियां,'' अर्थात पाप की ओर ''झुकाव'' डाल दीं, जिस कारण हमें आदम से ''पापपूर्ण स्वभाव'' मीरास में मिलता है। कई लेखक बड़े विश्वास से कहते हैं कि यह ''पापपूर्ण स्वभाव'' ही वह *कारण* है, जिससे हम पाप करते हैं। कई तो यह भी ज़ोर देते हैं कि यह *अनिवार्य* है कि हम पाप करें (यानी हम पाप करने से बच नहीं सकते) क्योंकि हमें आदम से यह ''पापपूर्ण स्वभाव'' मीरास में मिला है। कुछ अनुवादों में यह धर्मशिक्षा मिलती है। उदाहरण के लिए NIV में ''मांस'' के लिए यूनानी शब्द (*sarx*) का अनुवाद ''पापपूर्ण स्वभाव'' के रूप में किया गया है (रोमियों 7:18; 8:4; 5, 8; 13:14)। हमें बताया जाता है कि ''पापपूर्ण स्वभाव'' इस बात का पता देता है कि कुछ लोग इतने शैतान कैसे हो जाते हैं और यहां तक कि बच्चे अपने माता-पिता की आज्ञा क्यों तोड़ते हैं।

''आनुवंशिक भ्रष्टता'' के इस संशोधित विचार से मुझे दिक्कत है। पहले तो मेरा मानना है कि अभी भी यह पहले बताए स्पष्ट वचनों के अलावा परमेश्वर द्वारा हम सब को दी गई स्वतन्त्र इच्छा की बाइबली शिक्षा का उल्लंघन है। दूसरा, मुझे यह समझ नहीं आता कि आदम अपनी संतान को ''पापपूर्ण स्वभाव'' कैसे दे सकता था। क्या आदम के पास पाप करने से पहले कोई चीज़ थी? अन्य शब्दों में क्या उसने इसलिए पाप किया क्योंकि उसका स्वयं का ''पापपूर्ण स्वभाव'' था? यदि ऐसा है तो फिर परमेश्वर का जिसने आदम को बनाया ''पापपूर्ण स्वभाव'' होना चाहिए। इसलिए आदम के पाप की जिम्मेदारी परमेश्वर पर आई। निश्चय ही हम इस निष्कर्ष को नहीं मान सकते।

यदि आदम का पाप करने से *पूर्व* ''पापपूर्ण स्वभाव'' नहीं था, तो उसका ''पापपूर्ण स्वभाव'' (पसंद के लिए वर्तमान शब्द का इस्तेमाल करें) उसकी स्वतन्त्र इच्छा का इस्तेमाल करने के कारण आया होगा। अन्य शब्दों में, उसका ''पापपूर्ण स्वभाव'' प्राप्त की गई विशेषता थी। इस कारण ''आनुवंशिक भ्रष्टता'' की संशोधित शिक्षा के अनुसार आदम ने प्राप्त की गई विशेषता आगे सौंपी। जो एक तर्कहीन और न मानने योग्य निष्कर्ष है। यदि मेरा एक्सीडेंट हो जाता है और मेरा हाथ कट जाता है (प्राप्त की गई एक विशेषता), तो इसका अर्थ यह नहीं है कि मेरे बच्चे बिना हाथ के पैदा होंगे।

आदम ने पाप इसलिए नहीं किया कि उसे ''पापपूर्ण स्वभाव'' के साथ बनाया गया था, और न ही हम पाप इसलिए करते हैं कि हम ''पापपूर्ण स्वभाव'' के साथ पैदा हुए। तो फिर उसने पाप क्यों किया? हम पाप क्यों करते हैं? मानवीय व्यवहार के रहस्य की हर बात को समझने का दावा किए बिना, मैं आदम और अपने बारे में बाइबल की कुछ मूल सच्चाइयों की समीक्षा करता हूं:

- आदम की आत्मा को परमेश्वर द्वारा शुद्ध और पवित्र बनाया गया था। हमारी आत्माएं भी इसी प्रकार हैं और वे शुद्ध और पवित्र हैं, क्योंकि वे परमेश्वर द्वारा दी गई हैं (देखें जकर्याह 12:1; सभोपदेशक 12:7)।
- आदम को स्वतन्त्र इच्छा देकर बनाया गया था यानी वह अपनी इच्छा से परमेश्वर की बात मान या ठुकरा सकता था। परमेश्वर की बात मानने या ठुकराने की हमें भी योग्यता दी गई है (देखें व्यवस्था विवरण 30:15–20)।
- आदम परमेश्वर के स्वरूप में एक जीवित आत्मा था, परन्तु उसकी मांस की देह भी थी। परखने वाले ने आदम और हव्वा पर उनकी शारीरिक अभिलाषाओं के द्वारा हमला किया (उत्पत्ति 3:6)। हर ज़िम्मेदार व्यक्ति आत्मा और शरीर के बीच तनाव का अनुभव करता है (मत्ती 26:41; देखें 1 यूहन्ना 2:16; रोमियों 7:18, 19)।
- स्वर्गलोक (अदम की वाटिका) में भी परीक्षा थी। पाप के बीमार संसार में, परीक्षा के साथ निरंतर हम पर हमला किया जाता है (देखें इब्रानियों 2:18; 4:15)।
- जिसे पसन्द चुनने की छूट हो वह हमेशा सही पसन्द नहीं चुनेगा। जब कोई परीक्षा में पड़े और गलत पसन्द चुने, वही तो पाप है। आदम ने गलत पसन्द चुनी, और यही हम करते हैं (रोमियों 3:23)।
- आदम ने स्वतन्त्र इच्छा के एक कार्य के रूप में परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी। वह दोषी ठहराया गया क्योंकि *उसने* पाप किया था। इसी प्रकार हम स्वतन्त्र नैतिक जीवों के रूप में पाप करते हैं और *अपने* पापों के लिए ज़िम्मेदार होते हैं न कि दूसरों के पापों के रूप में।

आत्मिक तौर पर हम में से हर कोई जीवन का आरम्भ वहीं से करता है, जहां से आदम ने किया था। वह हमारी तरह ही मनुष्य था। उससे भूल हो सकती थी और हम से भी भूल हो सकती है। कभी न कभी हम में से हर कोई वही गलती करता है जो उसने की यानी हम परमेश्वर की आज्ञा तोड़ते हैं। जब हम ऐसा करते हैं तो हम अपने किए के लिए ही जिम्मेदार होते हैं न कि आदम के किए के। डियसन ने इसे इस प्रकार कहा है: ''लोग पापी पापपूर्ण समाज से बनते हैं न कि पापपूर्ण जीन से! लोग पापी पसन्द चुनकर उसे व्यवहार में लाने से बनते हैं।''[17] मैं फिर दावा करता हूं कि बाइबल यह *नहीं* सिखाती कि हमें आदम के पाप का दोष मीरास में मिलता है।

यह सब के उद्धार की शिक्षा *नहीं* देती

जो लोग यह मानते हैं कि *हर किसी* का उद्धार हो जाएगा, वे रोमियों 5:12–21 का इस्तेमाल बाइबल में से सबूत के तौर पर भी करते हैं। उनकी इस स्थिति को कई बार ''डॉक्ट्रिन ऑफ़ यूनिवर्सलिज़्म'' कहा जाता है।

यह तर्क आयत 18 पर केन्द्रित है: ''इसलिए जैसा एक अपराध [अदन में आदम का पाप] सब मनुष्यों के लिए दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का काम [क्रूस पर मसीह की मृत्यु] भी सब मनुष्यों के लिए जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ।''

विश्वास यह है कि आदम का पाप हर किसी को दोषी ठहराता है, परन्तु मसीह की मृत्यु ने आदम के पाप के प्रभावों को इस प्रकार से उलट दिया कि हर किसी का उद्धार हो जाएगा। एक बार फिर हमें किसी अस्पष्ट वचन पर मुख्य डॉक्ट्रिन की स्थिति को आधार बनाने का उदाहरण मिलता है, जो पवित्र शास्त्र की व्याख्या और उसे लागू करने में एक बड़ी गलती है।

बाइबल स्पष्ट सिखाती है कि हर किसी का उद्धार *नहीं* होगा। कई आयतें दोहराई जा सकती हैं (देखें मत्ती 25:34, 41, 46), परन्तु रोमियों की पुस्तक में पौलुस के अपने कथनों से थोड़ा देखने की आवश्यकता नहीं है। अध्याय 2 में यह कहते हुए कि ''जो सत्य को नहीं मानते वरन अधर्म को मानते हैं, उन पर क्रोध और कोप पड़ेगा'' (आयत 8)। उसने ''क्रोध के दिन'' की बात की ''जिसमें परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा'' (आयत 5)। अध्याय 12 में उसने फिर ''परमेश्वर के क्रोध'' की बात की और पुराने नियम से बताया कि ''बदला लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला लूंगा'' (आयत 19)।

कइयों ने हमारे वचन पाठ में ''कई'' और ''सब'' जैसे शब्दों को पकड़ लिया है, यह निष्कर्ष निकालते हुए कि चाहे वचन में सब के उद्धार की शिक्षा नहीं है परन्तु यह अवश्य सिखाता है कि खोने वालों से कहीं अधिक उद्धार पाए हुए होंगे। हम सब चाहते हैं कि ऐसा ही हो, परन्तु यीशु की स्पष्ट शिक्षा को मानना होगा कि उद्धार पाए हुओं से खोए हुए अधिक होंगे (मत्ती 7:13, 14)।

5:18 के अर्थ पर हम अगले एक पाठ में चर्चा करेंगे। अभी के लिए मैं फिर से केवल इतना कहता हूं कि यह आयत यह *नहीं* सिखाती कि अन्त में सब का उद्धार हो जाएगा।

यह आयत क्या *सिखाती* है

विचार किया गया एक प्रश्न

हमने उस पर ज़ोर दिया है, जो 5:12-21 *नहीं* सिखाता, परन्तु अभी हमें यह तय करना है कि यह *क्या* सिखाता है। जो प्रश्न इस वचन की व्याख्या को सबसे अधिक प्रभावित करता है, वह यह है कि आयत 12 वाली मृत्यु शारीरिक मृत्यु है, आत्मिक मृत्यु या दोनों का मेल। इस प्रश्न का उत्तर देना आसान नहीं होगा।

आयत 12 इस प्रकार है: ''इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा *मृत्यु* आई, और इस रीति से *मृत्यु* सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिए कि सब ने पाप किया।'' मैंने उन लोगों के तर्क का अध्ययन किया है जो यह कहते हैं कि बिना किसी शक के इस संदर्भ में ''मृत्यु'' *शारीरिक* मृत्यु ही है। आइए उनकी बात की कुछ शक्तियों पर विचार करते हैं।

(1) आयत 12 का पहला भाग उत्पत्ति 2 और 3 में आदम के पाप की कहानी पर आधारित है, जहां परमेश्वर ने कहा, ''तुम निश्चय मरोगे'' (2:17; देखें 3:3)। मुझे और आपको पाप के परिणाम पर बाइबल की शिक्षा के चार हज़ार से अधिक वर्षों का फायदा मिला है, इसलिए हम समझते हैं कि आदम के पाप का परिणाम शारीरिक और आत्मिक मृत्यु, दोनों हुआ। परन्तु आदम को इन शब्दों का अर्थ *शारीरिक* मृत्यु आया होगा। उसने मना किया गया फल खाया इसलिए उसे निकाल दिया गया ताकि वह जीवन के वृक्ष का फल न खा सके (2:9; 3:24)। उसका शरीर घटने लगा, ठीक वैसे ही जैसे हमारा शरीर घटता है।[18]

(2) पौलुस ने पहले एक पत्र में (देखें 1 कुरिन्थियों 15:21, 22, 45-49) आदम/मसीह की तुलना का इस्तेमाल किया। लगता है कि रोमियों 5:12-21 जैसे 1 कुरिन्थियों 15:22 के विचार को ही सुना रहा हो: ''जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे।'' 1 कुरिन्थियों 15 का मुख्य ज़ोर *देह* के जी उठने पर है, सो यह कहना तर्कसंगत है कि *देह* पर पाप का प्रभाव ही रोमियों 5 अध्याय के हमारे वचन में मुख्य विचार है।

(3) यह पद्य स्पष्ट सिखाता है कि एक व्यक्ति के पाप से सारी मनुष्य जाति प्रभावित हुई। यदि कैल्विनवादी निष्कर्षों को निकाल दें तो आदम के पाप ने *सारी* मनुष्यजाति को, यहां तक कि उन बच्चों को भी जो पाप नहीं करते कैसे प्रभावित किया? उसके पाप के परिणामस्वरूप हम सब *शारीरिक रूप में* मरते हैं।

मैंने उन लोगों के तर्क पर भी विचार किया है जो कहते हैं कि बिना किसी शक के इस आयत में ''मृत्यु'' का अर्थ *आत्मिक* मृत्यु है। इस व्याख्या की दो शक्तियां हैं:

(1) इस आयत का आरम्भ ''इसलिए'' से होता है जो इसे उससे जोड़ता है जो पौलुस ने पहले कहा। पिछले संदर्भ के साथ शारीरिक चिंताओं के बजाय आत्मिक चिंताएं अधिक मेल खाती हैं।

(2) यह स्थिति ''सबने पाप किया'' (आयत 12) का अर्थ वैसे ही करने की अनुमति देती है, जैसे इसने 3:23 में दिया और ''धर्मी ठहराई जाने'' (आयत 18) जैसे शब्दों का वैसे इस्तेमाल करने जैसे पिछले साढ़े चार अध्यायों में किया गया। (रोमियों के नाम अपने पत्र में पौलुस ने अलग अलग संदर्भों में अलग-अलग अर्थ बताने के लिए कुछ मुख्य शब्दों का इस्तेमाल किया; परन्तु आम तौर पर सबसे साधारण अर्थ को ही प्राथमिकता दी जानी चाहिए।)

अन्त में मैंने उन लोगों की टिप्पणयां पढ़ीं, जो यह ज़ोर देते हैं कि शारीरिक और आत्मिक मृत्यु में से गलत है, कि पौलुस के मन में आदम के पाप का कोई भी और हर दण्ड और परिणाम था।[19] जेम्स डी. जी. डन ने लिखा है, ''यहूदी विचार की व्यापक बुहार की तरह ... , 'आत्मिक' और 'शारीरिक' मृत्यु के बीच अन्तर का कोई सुझाव नहीं है। ... वे सृष्टिकर्त्ता से सृष्टि के पूर्ण सफाई को दिखाते हैं।''[20] मौरिस ने कहा, ''दोनों वचनों [आयतें 17, 21] को समझने का सबसे अच्छा ढंग शायद दोनों प्रकार की मृत्यु के हवाले से देखना है। शारीरिक मृत्यु दिमाग में है, परन्तु अपने पाप में शारीरिक मृत्यु नहीं; यह आत्मिक मृत्यु के चिह्न और प्रतीक के रूप में शारीरिक मृत्यु है।''[21]

रोजर्स ने ध्यान दिलाया कि रोम में पत्र भेजे जाने के समय, इसके मूल प्राप्तकर्त्ताओं के लिए यह पत्र *पढ़ा* गया होगा।[22] 5:12-21 को ऊंची आवाज़ में पढ़ने में केवल कुछ मिनट लगते हैं, इसलिए सुनने वालों ने इस वचन की मुख्य बात को अपने मन में रखा होगा कि मनुष्यजाति में आदम के कारण जो भी समस्याएं आईं मसीह ने उन्हें सम्भाल लिया। एडवर्ड ने ऐसी ही बात कही।[23] उसने लिखा कि ''मुद्रण कला'' की शक्ति पूरी तस्वीर में है न कि विवरणों में। उसने सुझाव दिया कि विवरणों पर ज़ोर देने से रूपक की चिह्न/प्रति चिह्न के रूपक को न समझ पाना है।

आयत 12 में ''मृत्यु'' से सम्बन्धित इन सभी स्थितियों से मैं प्रभावित हुआ हूं। जब तक इन विचारों को रखने वाले लोग वे विचार नहीं सिखाते जो बाइबल में कहीं और दिए गए स्पष्ट वचनों

का उल्लंघन है, मैं पक्का नहीं कह सकता कि उनमें से कोई गलत है। हर किसी के ढंग में कुछ शक्ति और कुछ कमज़ोरी हो सकती है। कोई जिस भी ढंग को माने, उस पर विजय पाने में दिक्कतें हैं।

वचन पाठ की समीक्षा

पौलुस ने सोचा होगा कि उसकी बात स्पष्ट है कि जो कुछ हमने आदम में खोया, मसीह में हमें उससे कहीं अधिक मिल गया है। यह एक महत्वपूर्ण विचार है बल्कि गम्भीरता वाला विचार भी है, परन्तु है स्पष्ट। कोई आश्चर्य नहीं कि वह अपनी बातों की बारीकी से की गई जांच पर चकित हुआ होगा। तो भी हम पर वचन की समीक्षा करने की जिम्मेदारी है। वह हम अगले पाठ में आरम्भ करेंगे। मैं इतनी सामग्री देने की कोशिश करूंगा, जिससे आप हर आयत में पौलुस की बात पर अपना निर्णय लेने के योग्य हो सकें।

सारांश

जब कोई क्लास आदम के पाप के प्रभावों पर चर्चा करती हैं तो आमतौर पर यह प्रश्न पूछा जाता है: ''यदि आदम पाप न करता?'' इस प्रश्न का एक पहलू यह है कि *आदम* का क्या होता यदि वह पाप न करता। उस दृश्य पर सदियों से बहस जारी है। एक प्रसिद्ध विचार यह है कि आदम हनोक और एलिय्याह की तरह बिना मरे स्वर्ग में पहुंचा दिया जाता। परन्तु अधिकतर लोग प्रश्न के एक और पहलू में अधिक रुचि लेते हैं कि यदि आदम पाप न करता तो क्या *संसार* की यह हालत होती? ''क्या होता यदि'' जैसे आम प्रश्नों की तरह इस प्रश्न का उत्तर देना भी असम्भव है क्योंकि आदम ने पाप तो *किया।* मैंने हमेशा यही माना है कि यदि आदम पाप न करता और संसार में गड़बड़ न होती ... और उसके बच्चे पाप न करते और न उसके बच्चों के बच्चे ... तो अन्त में जब मेरी बारी आती, तो *मैं* पाप कर देता और अन्त में परिणाम वही होता।

इस पाठ का उद्देश्य आदम को दोषी ठहराकर उसे यह कहना नहीं है कि ''पाप करके संसार में हर प्रकार की परेशानियां लाने के लिए तुम्हें शर्म आनी चाहिए।'' तथ्य यह है कि हम सब आदम के पद चिह्नों पर चलें, हम सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रह गए हैं (3:23)। परिणाम शारीरिक मृत्यु से कहीं बुरा है क्योंकि हम आत्मिक रूप से मरते हैं (6:23) और अपने प्राणों को ''दूसरी मृत्यु अर्थात आग की झील'' के खतरों में डालते हैं (प्रकाशितवाक्य 20:14)। 5:12-21 का अध्ययन जारी रखते हुए, फिर इस बात पर ज़ोर दिया जाएगा कि हमारी एकमात्र आशा यीशु है। ''एक मनुष्य [आदम] के द्वारा पाप जगत में आया'' (आयत 12), परन्तु एक और मनुष्य (यीशु) के द्वारा अनुग्रह जगत में आया। आप आदम का उदाहरण मानना जारी रख सकते हैं, या आज भी यीशु के पीछे चलना चुन सकते हैं। आप इनमें से किसे चुनेंगे?

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस प्रवचन का इस्तेमाल करने लिए आपको चाहिए कि आप सुनने वालों को बताएं कि वे यीशु के पीछे चलना कैसे चुन सकते हैं-सुसमाचार के संदेश पर विश्वास करें (1:16), अपने पापों से मन फिराकर (2:4), परमेश्वर के पुत्र के रूप में मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार

करके (10:9, 10), अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेकर (6:3-6) मसीही जीवन जीयें (12:1)।

यह पाठ तीन भागों वाली प्रस्तुति का पहला भाग है। आप केवल मुख्य बातों का इस्तेमाल करके तीनों को मिलाकर ''दो 'आदमों' पर एक ही पाठ'' बना सकते हैं। इस पाठ की जानकारी परिचय में इस्तेमाल की जा सकती है। आपके तीन मुख्य प्वांयट ''दो 'आदमों' का परिचय,'''दो 'आदमों' में अन्तर'' और ''दो 'आदमों' की तुलना'' हो सकती है। तीसरे पाठ की प्रासंगिकताएं (स्पष्ट सच्चाइयां आपके निष्कर्ष का भाग हो सकती हैं)।

5:12-21 को एक पाठ में प्रस्तुत करने के कई ढंग। चार्ल्स स्विन्डल ने चार्ल्स डिकन्स की श्रेष्ठ पुस्तक *ए टेल ऑफ टू सिटीस* से उदाहरण लेते हुए ''दो आदमियों की कहानी'' के विचार का इस्तेमाल किया।[24] विलियम बार्कले ने यह ज़ोर देते हुए कि हम ''पाप के द्वारा बर्बाद हो गए'' थे परन्तु ''मसीह द्वारा बचा लिए गए'' हमारे इस वचन पाठ के लिए अपने अध्ययन को ''बर्बाद और बचाव'' का नाम दिया।[25] कई लेखकों ने जॉन मिल्टन की श्रेष्ठ पुस्तक से लेते हुए पाठ का नाम ''स्वर्ग लोक खोया और फिर मिल गया'' दिया है। हमारे वचन पाठ में ''राज किया'' शब्द का इस्तेमाल कई बार हुआ है (आयतें 14, 17, 21) इसलिए डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को ने अपनी टिप्पणियों को ''चार राज्य'' नाम दिया है।[26] आप वचन के ''अधिकाई'' पर टिप्पणियां केन्द्रित कर सकते हैं (आयतें 15, 17; देखें आयतें 20)।[27]

टिप्पणियां

[1]जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1965), 40 से लिया गया। [2]मोसेस ई. लार्ड, *कमैंट्री ऑन पॉल 'स लैटर टू रोमन्स* (लैक्सिंगटन, कैंटकी: पृष्ठ नहीं, 1875. रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 162. [3]रिचर्ड रोजर्स, *पेड इन फुल: ए कमैंट्री ऑन रोमन्स* (लब्बॉक, टैक्सस: सनसैट इंस्टीट्यूट प्रैस, 2002), 83. [4]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 181. [5]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड 'स गुड न्यूज़ फॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 149. [6]आर. सेंट जॉन पैरी, *दि एपिस्टल ऑफ पॉल द अपोस्टल टू द रोमन्स* (कैम्ब्रिज: यूनिवर्सिटी प्रैस, 1921), 84. [7]जिम मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: मोन्टैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 178. [8]लैरी डियसन, *''दि राइटीयसनेस ऑफ़ गॉड'': एन इन-डेप्थ स्टडी ऑफ़ रोमन्स,* संशो. (क्लिफटन पार्क, न्यू यॉर्क: लाइफ कम्युनिकेशन्स, 1989), 142. [9]वही, 156. [10]मौरिस, 231 में उद्धृत।

[11]कैथोलिक डॉक्ट्रिन के अनुसार, ''लिम्बो'' उन धर्मी लोगों के लिए भी स्थान है, जो क्रूस पर यीशु के बलिदान से पूर्व हुई। *दि कैथोलिक इन्साइक्लोपीडिया* [न्यू यॉर्क: इन्साइक्लोपीडिया प्रैस, 1913] 9:256-59 में (चार्ल्स जी. हर्बरमन, et.al., एडि., ''लिम्बो,'')। [12]ऐसे वचनों की तुलना भजन संहिता भजन संहिता 58:3 से करें, जो यह संकेत देता है कि दुष्ट लोग जन्म से ही झूठे होते हैं। अक्षरश: लिए जाने पर यह असम्भव है। [13]जेम्स आर. एडवर्डर्स, *रोमन्स,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएटस: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1992), 147. [14]मू, 189. [15]एडवर्ड्स, 148. [16]मौरिस, 231. [17]डियसन, 151. [18]कइयों का मत है कि आदम के पाप करने से पूर्व कोई शारीरिक मृत्यु नहीं थी। मनुष्यों तथा पशुओं को दोनों को खाने के लिए पौधे दिए गए थे (उत्पत्ति 1:29, 30)। सुझाव दिया गया है कि पहली शारीरिक मृत्यु आदम के पाप करने के बाद हुई, जब आदम और हव्वा का तन ढकने के लिए पशुओं को मारा गया था (उत्पत्ति 3:21)। [19]रोमियों 1:32 में इस्तेमाल की गई ''मृत्यु'' शब्द पर टिप्पणियां देखें (*रोमियों, 1* में पृष्ठ 90 पर ''पौलुस का 'संसार की स्थिति' का संदेश'' पाठ देखें)। [20]जेम्स डी. जी. डन *रोमन्स 1-8,* वर्ड

बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 38 (डलास: वर्ड बुक्स, 1988), 273.

[21]मौरिस, 230. [22]रोजर्स, 84. [23]एडवर्ड्स, 146. [24]चार्ल्स आर. स्विन्डल, *कमिंग टू टर्म्स विद सिन: ए स्टडी ऑफ़ रोमन्स 1–5* (अनहीम, कैलिफोर्निया: इनसाइट फ़ॉर लिविंग, 1999), 87–88. स्विन्डल ने दोनों को ''दोष का पुरुष'' और ''अनुग्रह का पुरुष'' नाम दिया। [25]विलियम बार्कले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 77, 82. [26]डी. स्टुअर्ट, ब्रिस्को, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 119. [27]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1973), 208. अपने परिचय में आप पिछले पाठ से ''बहुतायत'' लिख सकते हैं (5:9, 10)।